इश्क से तन, मन, धन की कुर्बानी दी है। तीसरी खूबी बसरी, मलकी, और हकी सूरतों की है, जिन्होंने पारब्रह्म के स्वरूप की पहचान कराई और अन्त समय में तीनों हिन्दुओं के तन में आए।

**रसूल रूहअल्ला और इमाम, ए तीनों एक कहे अल्लाकलाम।**
**बसरी मलकी और हकी, तीनों तरफ साहेब के साकी।। ३७ ।।**

रसूल साहब, रूह अल्लाह और इमाम मेहेंदी तीनों एक ही हैं, ऐसा कुरान में लिखा है। यह बसरी, मलकी और हकी तीनों का ज्ञान श्री अक्षरातीत पारब्रह्म की पहचान कराकर प्रेम रस (इश्क) का आनन्द दिलाने वाले हैं।

**आदम नूह मूसा इभराम, और अली भेला माहें इमाम।**
**महंमद ईसा पेहेले कहे, ए सातों कलमा आए इत भेले भए।। ३८ ।।**

आदम सफी अल्लाह, नूह नबी अल्लाह, मूसा कलीम अल्लाह, इब्राहीम खलील अल्लाह, अली वली अल्लाह, मुहम्मद रसूल अल्लाह, ईसा रूह अल्लाह यह सातों कलमे वाले पैगम्बरों की शक्ति श्री प्राणनाथजी के अन्दर समाई है।

**जेता कोई पैगंमर और, सारी सिफतें याही ठौर।**
**सतरहें सिपारे यों कर कह्या, बिना महंमद कोई आया न गया।। ३९ ।।**

और जितने भी पैगम्बर हो गए हैं, उन सबकी शक्तियां इस समय श्री प्राणनाथजी के अन्दर समाई हैं। कुरान के सत्तरहवें सिपारे में इस तरह से लिखा है कि एक मुहम्मद के अतिरिक्त खुदा के पास कोई आया गया नहीं है, इसलिए एक मुहम्मद ही सच्चे पैगम्बर हैं और कोई दूसरा नहीं है।

**और लिख्या अठारमें सिपारे, महंमद नाम पैगंमर सारे।**
**सब पैगंमरों को जो सिफत दई, सो सिफत सब रसूल की कही।। ४० ।।**

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है कि मुहम्मद के नाम के बहुत सारे पैगम्बर हुए हैं। इन सब पैगम्बरों के नाम पर जो पहचान बताई है, वह सारी महिमा रसूल साहब की ही है।

**ए मगज खोल्या कुरान, सुनो हिंदू या मुसलमान।**
**जो उठ खड़ा होसी सावचेत, साहेब ताए बुजरकी देत।। ४१ ।।**

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि कुरान, हदीस, वेद, कतेब सबके रहस्य कुलजम सरूप की वाणी ने खोल दिए हैं। हिन्दू-मुसलमान सभी मिलकर सुनो, विचार करो और ईमान लाओ। इस वाणी के द्वारा माया-ममता का मोह छोड़कर जो जागृत हो जाएगा, उसको आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी महाराज अखण्ड और अविनाशी महिमा का सुख देते हैं।

**कहे छत्ता तिनका अंकूर, नूर तजल्ला माहें जहूर।। ४२ ।।**

महाराजा छत्रसालजी कहते हैं कि इस बात को सुनकर ईमान और इश्क पर खड़े होने वाले मोमिनों का मूल अंकूर परमधाम में है और वह अक्षरातीत श्री राजजी महाराज के सामने उठ खड़े होंगे।

|| प्रकरण || ५ || चौपाई || १४७ ||

**हो सैयां फुरमान ल्याए हम, आए वतन से वास्ते तुम।**
**इनमें खबर है तुमारी, हकीकत देखो हमारी।। १ ।।**

श्री प्राणनाथजी महाराज अपने सुन्दरसाथ से कहते हैं, हे साथजी! मैं तुम्हारे वास्ते कुरान के छिपे रहस्यों को खोलने वाली कुलजम सरूप की वाणी लेकर आया हूं। इस वाणी में परमधाम (मूल-मिलावा)

Nijanand App

में हुए इश्क रब्द से लेकर वापस घर चलने तक और तुम्हारे द्वारा सारे संसार के जीवों को अखण्ड मुक्ति बहिश्तों में देने की और ईश्वरीसृष्टि को उसके धाम पहुंचाने की हकीकत लिखी है। मैं तुम्हारे वास्ते यह वाणी लेकर आया हूं, इसलिए इस वाणी से तुम मेरे स्वरूप को पहचानो। मैं ही तुम्हारा धाम का धनी प्राणनाथ हूं।

**सिफत रसूल अल्ला कलाम, रूहअल्ला ईसा पाक इमाम।**
**कही खास उमत महंमद, जाकी सिफतको न पोहोंचे सब्द।।२ ।।**

इसमें रसूल मुहम्मद द्वारा लाए कुरान के छिपे रहस्य खोले गए हैं। श्यामा महारानीजी मल्की सूरत और हकी सूरत इमाम मेंहेंदी इन तीनों सूरतों की पहचान है और श्यामा महारानी के अंग जो ब्रह्मसृष्टियां हैं, उनकी महिमा बताई है, जो कि यहां के शब्दों में कहना सम्भव नहीं है।

**सोई कहूंगी जो लिख्या कुरान, सब्द न काढूं बिना फुरमान।**
**या तो कहूं महंमद हदीस, भला मानो या करो रीस।।३ ।।**

श्री महामतिजी कहते हैं कि कुरान में जो आगम लिखा है उसका प्रमाण देकर कहूंगी। बिना कुरान की गवाही के एक शब्द भी नहीं बोलूंगी। या तो मुहम्मद साहब की हदीस से गवाही दूंगी। उसमें तुम हिन्दू या मुसलमान को भला लगे तो ईमान लाना, बुरा लगे तो अलग हो जाना। हमको तो प्रमाण देकर सत्य कहना है।

**दे साहेदी कहूंगी हक, सो देखो कुरान जाए होवे सक।**
**अब लों जाहेर थी सरीयत, खोले माएने बातून हकीकत।।४ ।।**

आप महामतिजी कहते हैं कि मैं गवाही देकर सत्य बात कहूंगी जिसे संशय हो, वह कुरान, हदीसों में जाकर देख ले। आज दिन तक कर्मकाण्ड की और रसूल साहब द्वारा चलाई शरीयत की ही जानकारी लोगों में थी। अब मैंने सब धर्मग्रन्थों के बातूनी रहस्य खोलकर हकीकत का ज्ञान (कुलजम सरूप वाणी) दे दी है और कयामत की पहचान करा दी है।

**अब सबमें जाहेर हुई कयामत, खुले कलाम जब पोहोंची सरत।**
**लिख्या सिपारे सोलमें मिने, आगे राह न पाई किने।।५ ।।**

ग्यारहवीं सदी में कयामत होने की बात लिखी थी। श्री प्राणनाथजी महाराज ने सब किताबों के छिपे रहस्य खोल दिए और सब दुनियां को कयामत की जानकारी हो गई। कुरान के सोलहवें सिपारे में लिखा है कि इससे पहले के पैगम्बरों में से किसी ने भी हकीकत और मारफत का ज्ञान नहीं पाया।

**ए जो चौदे तबक की जहान, इनकी फिकर लग आसमान।**
**जब लग आए रसूल महंमद, किने न छोड़ी अक्सा मसजिद।।६ ।।**

यह चौदह लोक की दुनियां के बड़े-बड़े पीर, पैगम्बर, ज्ञानी, अगुओं, की पहुंच निराकार तक ही है। जब तक रसूल साहब संसार में नहीं पधारे, तब तक इब्राहीम की बताई अकसा मस्जिद अर्थात् निराकार की पूजा करते रहे। अब श्री प्राणनाथजी महाराज ने आकर सभी धर्मग्रन्थों के रहस्य खोलकर कुलजम सरूप की वाणी से शरीयत, कर्मकाण्ड, स्वर्ग, बैकुण्ठ, निराकार का रास्ता छुड़ाया और अखण्ड परमधाम में विराजमान श्री राजजी महाराज की पहचान कराकर सिजदा कराया।

Nijanand App

**और लिख्या मेयराजनामें माहीं, जब हुआ मेयराज रसूल के तांई।**
**रसूल चले पांउं सिर दे, संग एक जबराईल ले।। ७ ।।**

रसूल साहब को जो मेयराज हुआ (दर्शन हुआ) और श्री राजजी महाराज से जो बातें हुईं, वह सभी बातें मेयराजनामे में लिखी हैं। एक रसूल साहब ही जबराईल फरिश्ते के साथ अकसा मस्जिद (निराकार) मोह तत्व को उलंघकर आगे गए।

**चौदे तबक की खबर भई, ला मकान हवा को कही।**
**निराकार कहिए सुंन, एही बेचून बेचगून।। ८ ।।**

मेयराज में जाते समय रसूल साहब को पाताल से बैकुण्ठ की पूरी जानकारी मिली और आगे निराकार मोह तत्व जिसका रूप रंग नहीं है, जिसको वेद में निराकार, निरंजन, शून्य कहा है और कुरान में बेचून, बेचगून कहा है, उसकी पूरी पहचान हो गई।

**छोड़ याको आगे को गए, नूर बनमें दाखिल भए।**
**जबराईल रह्या इन ठौर, ला मकान से ए मकान और।। ९ ।।**

निराकार, शून्य को छोड़कर आगे गए और अक्षरधाम के वनों में प्रवेश किया। जबराईल फरिश्ता यहीं रुक गया। निराकार से यह अक्षरधाम अलग ही है, क्योंकि यह अखण्ड अविनाशी है।

**आगे चल न सक्या क्योंही कर, नूर तजल्ली जलावे पर।**
**तहां पोहोंचे रसूल एक, तित अनेक इसारतें कही विवेक।। १० ।।**

आगे जबराईल फरिश्ता नहीं जा सका। नूरतजल्ला की तजल्ली से पर जलने लगे। वहां से चलकर रसूल साहब मूल-मिलावा में श्री राजजी महाराज के पास पहुंचे और उनसे कई तरह से बातें इशारतों में हुईं।

**लिख्या दरिया मीठा मिश्री से पाक, तित कह्या मुरग चोंचमें खाक।**
**गिरो फरिस्तों करी इसारत, खाक वजूद नूर खिलकत।। ११ ।।**

मेयराजनामा में इशारतों में लिखा है कि खुदा ने मोमिनों को बादशाही (साहेबी) और इश्क की पहचान कराने के वास्ते फरामोशी का खेल दिखाया है। यह बताया कि खेल में मोमिनों को साहेबी और इश्क की पहचान होने से बड़ी लज्जत मिली और इसलिए दरिया इस संसार को मिश्री से मीठा कहा है। मोमिनों के लिए दूध से उज्ज्वल कहा है, क्योंकि उनके दिल में कोई संशय नहीं रहा और खेल को पाक कर जीवों को अखण्ड मुक्ति बहिश्तों में दी है। यही पाक और निर्मल होना है। दरिया के किनारे वृक्ष पर चोंच में खाक लेकर मुर्ग बैठा है, अर्थात् हुकम रूपी वृक्ष है। उसमें श्री श्यामाजी के दिल रूपी चोंच में पांच तत्व का शरीर है। यह खाक है। रूहें मोमिन हैं। नूर खिलकत ईश्वरीसृष्टि है। यदि श्यामाजी हुकम रूपी वृक्ष में बैठे, तो मोमिन और ईश्वरीसृष्टि ने भी मनुष्य तन धारण किया।

**और कह्या देख दाहिंनी तरफ, मोतिन के मुंह पर कुलफ।**
**पूछा रसूलें कुलफ क्यों किया, तेरी उमतें गुनाह कर लिया।। १२ ।।**

खुदा ने रसूल से कहा कि तुम अपने दाहिने हाथ की तरफ देखो, श्री श्यामाजी हैं। यह भी फरामोशी में हैं। खुदा ने इशारत करके कहा कि जो मोती बारह हजार रूहें हैं, वह फरामोशी में हैं। रसूल साहब ने कहा कि इनके मुंह पर ताला क्यों है? तो हुकम हुआ कि यह तेरी जमात जो बारह हजार हैं, इन्होंने बार-बार मना करने पर भी खेल देखने की इच्छा की, अतः उन पर इस गुनाह की फरामोशी का ताला है। रसूल साहब ने पूछा कि इनकी फरामोशी कैसे हटेगी?

Nijanand App

**इनकी किल्ली तेरा दिल, खुले कुलफ जब आओ मिल।**
**सब हकीकत बीच किताब, पर पावे सोई जिन पर होए खिताब।। १३ ।।**

खुदा ने रसूल साहब से कहा कि इनकी फरामोशी हटाने की चाबी (मारफत की वाणी) तुम्हारे दिल में है। उस ज्ञान से ताला खुलेगा। जब फरामोशी की नींद समाप्त हो जाएगी, तब सब मिलकर मेरे परमधाम में आओगे। मेयराजनामा किताब में यह बातें इशारतों में लिखी हैं। इनको खोलने का खिताब इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी को दिया है। वही खोल सकेंगे और कोई नहीं।

**और कई बातें खुदाए से करी, लिए नब्बे हजार हरफ दिल धरी।**
**तीस हजार का हुआ हुकम, जाहेर करो दुनियां में तुम।। १४ ।।**

रसूल साहब ने और कई बातें खुदा से की हैं। नब्बे हजार बातों को सुनकर अपने दिल में रखा। तीस हजार शरीयत के हरफ दुनियां में जाहिर करने का हुकम दिया।

**और कहे जो तीस हजार, ए तुम पर रख्या अखत्यार।**
**बाकी रहे जो तीस हजार, आखिर इन पर है मुद्दार।। १५ ।।**

दूसरे तीस हजार हरफ हकीकत के हैं। इनको खोलने का अधिकार तुमको देता हूं जिसे योग्य समझना, उसे देना। बाकी के तीस हजार मारफत के हरफ हैं। इनको दिल में छिपाकर रखना। कयामत का मुद्दा (आधार) मारफत की वाणी है, जिसको मैं वक्त आखिरत में स्वयं आकर खोलूंगा और सबका न्याय चुकाऊंगा।

**सो कयामत पर बांधे निसान, एही सरत जब खुल्या कुरान।**
**अमेत सालूनमें एह बात, बिध बिध कर लिखी विख्यात।। १६ ।।**

मारफत के हरफ खोलकर कयामत के जाहिर होने के निशान बांधे हैं। ग्यारहवीं सदी के आखिर में आप श्री प्राणनाथजी ने कुरान के बातूनी भेद खोलकर जाहिर किए। अमेत सालून में यह बात अलग-अलग तरीके से विस्तार के साथ लिखी है।

**रूहें कही बारे हजार, बुजरकी को नहीं सुमार।**
**जिनकी इच्छासों फरिस्ता होए, बड़ा सबन का कहिए सोए।। १७ ।।**

बारह हजार मोमिन जो ब्रह्मसृष्टि हैं उनकी कुरान, हदीस, वेद, शास्त्रों में बड़ी महिमा गाई है। इनकी इच्छा से ही खेल बना है। इनकी पहचान के वास्ते वेद-कतेब के मायने खोलकर जागृत बुद्धि का फरिश्ता असराफील श्री प्राणनाथजी के साथ आया है, इसलिए असराफील फरिश्ते को सबसे बड़ा कहा है।

**सो रूहें दरगाह के माहें, ऐसा नजीकी और कोई नाहें।**
**सो ए रूहें आदमी सकल, ए आदमी इनकी नकल।। १८ ।।**

जो बारह हजार रूह मोमिन हैं, वह परमधाम के हैं। इनके समान श्री राजजी महाराज के नजदीक और कोई नहीं है। उन रूहों ने आकर यहां आदमी की जो शक्ल धारण की है, यह शक्ल परमधाम की परआतम की नकल है।

Nijanand App

**और लिख्या अठारमें सिपारे, नूर बिलंदसे उतारे।**
**काम हाल करें नूर भरे, नूर ले दुनियां में विस्तरे।।१९।।**

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है कि मोमिनों को खेल देखने के लिए खेल में उतारा है। मोमिनों की कहनी, करनी और रहनी इश्क रूपी नूर से भरी है और कुलजम सरूप की नूरी वाणी को लेकर दुनियां में जाहिर कर रहे हैं।

**और जो अंधेरीसे पैदा भए, काफर नाम तिनोंके कहे।**
**फिरे मन के फिराए उलटे फेर, काम हाल उनों के अंधेर।।२०।।**

जो निराकार से पैदा हैं, कुरान में उनको काफिर कहा है। यह अपनी गुण, अंग, इन्द्रियों और मन के चक्कर में रात-दिन झूठी माया के लिए ही चक्कर काटते रहते हैं, इसलिए उनकी कहनी, करनी और रहनी सब अज्ञानता और अन्धकार की होती है।

**और लिख्या वाही सिपारे, ए कुरान से न होए न्यारे।**
**फरिस्ते उतरे वास्ते कुरान, फरिस्तों पर आया फुरमान।।२१।।**

कुरान के अठारहवें सिपारे में लिखा है कि ब्रह्मसृष्टि परमधाम की हैं। दूसरी ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम की हैं जो मोमिनों के पड़ोसी हैं और इनके साथ लगी रहती हैं, कुरान में चार तरह से ज्ञान के दर्जे शरीयत, तरीकत, हकीकत और मारफत लिखे हैं। शरीयत और तरीकत से जीवसृष्टि अलग नहीं होती। हकीकत से ईश्वरीसृष्टि अलग नहीं होती। ब्रह्मसृष्टि मारफत के ज्ञान को नहीं छोड़ती, इसलिए कुरान में, हकीकत का ज्ञान ईश्वरीसृष्टि पर आया है और मारफत के दर्जे से रूहें चलती हैं, लिखा है।

**फौज फरिस्तों की भरी नूर, असराफील बजावे सूर।**
**और तीसमें सिपारे एह बयान, इन्ना इन्जुलना सूरत परवान।।२२।।**

असराफील फरिश्ते ने कुरान, हदीस, शास्त्रों के गुझ (गुप्त) भेद तारतम वाणी से खोले हैं जिससे ईश्वरीसृष्टि तथा ब्रह्मसृष्टि इश्क और ईमान से भर गए। यह इन्ना इन्जुलना सूरत आम सिपारे में लिखा है।

**फरिस्ते नजीकी जो बुजरक, साथें हुकम धनीका हक।**
**उतरे लैलत कदर के माहें, तीन तकरार रातके जाहें।।२३।।**

अक्षर की आत्मा (ईश्वरीसृष्टि) को भी बुजरक कहा है, क्योंकि यह मोमिनों के नजदीकी हैं। यह भी लैल तुल कदर में मोमिनों के साथ उतरे हैं। जिस रात के तीन भाग बृज, रास और जागनी हैं। इन तीनों में ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि साथ रही हैं।

**रूहों फरिस्तों वजूद धरे, जोस धनीका ले उतरे।**
**रात नूर भरी कही ए, जित रूहअल्ला के तन जो कहे।।२४।।**

ब्रह्मसृष्टि परमधाम से और ईश्वरीसृष्टि अक्षरधाम से धनी के जोश की ताकत लेकर खेल में उतरे हैं इसलिए लैल तुल कदर रात को नूर से भरी रात कहा है। रात के तीसरे ब्रह्माण्ड में जो मोमिन आए हैं उनको रूह अल्लाह के नूर के अंगों की शोभा प्राप्त हुई, क्योंकि इनमें ही कुलजम सरूप की वाणी का पूरा ज्ञान है।

Nijanand App

**एक तकरार हूद के घर, दूजे तकरार नूह किस्ती पर।**
**तीसरा तकरार ए जो फजर, जित रूहें फरिस्ते पैगंमर।। २५ ।।**

पहले तकरार में बृज में नन्द बाबा के घर में आए। दूसरी बार श्री राजजी ने श्री कृष्णजी के नाम से अखण्ड वृन्दावन में योगमाया को प्रगट कर अखण्ड रास रचाया, जिसे कुरान में तूफान-ए-नूह करके लिखा है। तीसरे भाग में ज्ञान का सवेरा हुआ, जिसमें श्री श्यामा महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लाए। सम्वत् १७४८ तक श्री प्राणनाथजी महाराज ने मोमिनों की जागनी की और कुलजम सरूप की वाणी दी। जिसके प्रसार के लिए ब्रह्मसृष्टि और ईश्वरीसृष्टि पैगम्बर बनकर संसार को ज्ञान देने लगीं।

**खैर उतरी महीने हजार, गिरो दोए भई सिरदार।**
**हुकम दिया सब इनके हाथ, भई सलामती इनके साथ।। २६ ।।**

सम्वत् १६६४ से लेकर १७४८ तक श्री राजजी महाराज की मेहर और सम्वत् १६७८ से कुलजम सरूप की वाणी मिली। श्री राजजी महाराज ने रूह मोमिनों के हाथों से दुनियां के जीवों को अखण्ड मुक्ति प्रदान कर अखण्ड बहिश्तों के देने का काम मोमिनों के हाथ दिया। इन मोमिनों ने श्री राजजी महाराज की पहचान कराकर दुनियां वालों से आग, पानी, पत्थर की पूजा छुड़वाई। कर्मकाण्ड और शरीयत के बन्धन छुड़ाए, इसलिए अब सारी दुनियां इनके चरणों में झुकती है, क्योंकि इनके द्वारा उनको अखण्ड मुक्ति मिली।

**आखिर मिलावा साहेब इत, रूहें फरिस्ते पैगंमर जित।**
**याही सिपारे छत्तीसमी सूरत, नीके कर तुम देखो तित।। २७ ।।**

कुरान के तीसवें सिपारे की छत्तीसवीं सूरत को अच्छी तरह देखो। जहां पद्मावतीपुरी में इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज साक्षात् विराजमान हैं। वहीं पर बारह हजार मोमिन और चौबीस हजार ईश्वरीसृष्टि का मिलावा होना है और यहीं छत्तीस हजार सुन्दरसाथ दुनियां को पैगाम देंगे।

**तीन सरूप खुदाएके कहे, तीनों तकरार रूहों बीच रहे।**
**एक बृज बाल दूजा रास किसोर, तीसरे बुढ़ापनमें भोर।। २८ ।।**

आम सिपारे की इन्ना इन्जुलना की सूरत में खुदा के तीन स्वरूपों का वर्णन है और तीनों तकरार में वह ब्रह्मसृष्टि के साथ रहे। पहले बृज भूमि में बाल स्वरूप बनकर, दूसरी बार रास में किशोर स्वरूप और तीसरी बार बुढ़ापे की लीला की और सवेरे का ज्ञान किया।

**दोए सरूप कहे मिने और, किल्ली कुरान ल्याए इन ठौर।**
**पांच सरूप मिले इत नूर, असलू बीज माहें अंकूर।। २९ ।।**

जागनी के ब्रह्माण्ड में दो स्वरूपों में अलग-अलग आए। एक स्वरूप से रसूल साहब कुरान का ज्ञान लेकर आए। दूसरे स्वरूप से श्री श्यामा महारानी तारतम ज्ञान की कुंजी लेकर आए। अब पांचों स्वरूप बृज, रास, रसूल साहब, श्री श्यामा महारानी और श्री प्राणनाथजी महामति के तन में बैठे, जिनसे कुलजम सरूप की वाणी जाहिर हुई।

**वजूद आदम का जैसा खाक, पांच पचीसों इनके पाक।**
**आठमें सिपारे एह बयान, लिख्या जाहेर बीच कुरान।। ३० ।।**

आखिरी जमाने के खाविंद श्री प्राणनाथजी का स्वरूप मनुष्य जैसा है। इनका पांच तत्व का तन पच्चीस प्रकृतियां, सब गुण, अंग इन्द्रियां पाक-साफ हैं। कुरान के आठवें सिपारे में यह हकीकत लिखी है।

Nijanand App

**एह दज्जाल जो अजाजील, सबमें दम इनका कमसील।**
**न करे सिजदा ऊपर आखिरी आदम, फेरया जाहेर कलाम अल्ला का हुकम।। ३१ ।।**

अजाजील शैतान सबके अन्दर बैठकर खुदा के रास्ते से भटकाने का नीच काम करता है। आखिरी स्वरूप इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी के ऊपरी वजूद को देखकर सिजदा नहीं बजाने देता। श्री प्राणनाथजी ने कयामत के समय खुदा के आने का पैगाम दिया। मक्का मदीने से चार वसीयतनामे भी लिखवाए। फिर भी काजियों ने वजूद को देखकर अल्लाह के हुकम वसीयतनामे को नहीं माना। पैगाम ठुकरा दिया।

**माहें गया सबनको खाए, पढ़े ढूंढ़त जुदा ताए।**
**जाहेरियों न देवे देखाए, ऊपर माएने दिए भुलाए।। ३२ ।।**

इसी तरह शैतान अबलीस सबके अन्दर बैठा ईमान छुड़वाता है और वश में करता है। पढ़े-लिखे लोग अपने अन्दर न देखकर बन्दगी के समय शैतान बाहर से आएगा, ऐसा समझते हैं। जाहिरी देखने वाले को अपने अन्दर का दज्जाल नजर नहीं आता और बाहरी मायनों से भूल में पड़ जाते हैं।

**दाभ तूल-अर्ज माएने बातन, मुख आदम का गधी तन।**
**बातून माएने कही कयामत, देखसी खुले हकीकत।। ३३ ।।**

कुरान में लिखा है कि आखिरी जमाने में दाभ तुल-अर्ज जानवर जमीन पर पैदा होगा। इसका अर्थ जाहिरी नहीं लेना। बातूनी अर्थ लेना है, क्योंकि उसका मुंह तो आदमी का होगा और शरीर में गधों के गुण अर्थात् न समाप्त होने वाला विकार भरा होगा। ऐसे जानवर को कुलजम सरूप की हकीकत की वाणी से ही समझा जा सकता है और तभी पता लगेगा कि कयामत के समय का यह निशान है।

**दज्जाल एक आंख जाहेरी, कई विध तिनकों लानत करी।**
**नाहीं दज्जाल आंख बातूनी, जासों मारफत पाइए धनी।। ३४ ।।**

दज्जाल अबलीस की एक आंख कही है, जिसे कई तरह से लानत लगी है। यह पांच तत्व के शरीर को सच्चा देखता है। आतम को नहीं देखने देता, इसलिए इसको गुनहगार लिखा है। इसने खुदा के स्वरूप श्री प्राणनाथजी की पहचान आत्मदृष्टि से नहीं की, इसलिए कुलजम सरूप की वाणी से वंचित रह गया।

**खोलने न दे आंख अंदर, दिल पर दुस्मन जोरावर।**
**पातसाही करे सबोंके दिल पर, ए जो बैठा ले कुफर।। ३५ ।।**

सब आदमियों के दिल को और गुण, अंग, इन्द्रियों को शैतान ने अन्दर बैठकर अपने वश में कर रखा है, इसलिए आत्मा की नजर को नहीं खुलने देता। यह शैतान झूठ, अज्ञान, काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह, मत्सर, सभी कुफ्रों की फौजों को लेकर दुनियां के लोगों के दिलों में बैठकर हुकूमत कर रहा है, जिससे जाहिरी मायने लेने वालों की आंखें नहीं खुलतीं।

**दुस्मन राह मारे इन हाल, भूले देखें बाहेर दज्जाल।**
**छठे सिपारे लिख्या इन पर, ईसा मारसी इन काफर।। ३६ ।।**

कुरान के छठे सिपारे में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह तारतम की वाणी से दज्जाल को मारेगा, क्योंकि यह दज्जाल सभी प्राणियों के अन्दर बैठकर ऐसी बुरी तरह से भटका देता है कि ईमान, प्रेम-भाव, भक्ति, शील, सन्तोष, गरीबी और नम्रता आने ही नहीं देता। इस तरह परमात्मा के रास्ते को रोककर बैठा है। भूले लोग दज्जाल की राह बाहर से देख रहे हैं।

Nijanand App

**करसी राज चालीस बरस, सब जहान होसी एक रस।**
**साहेबी उमत की साल दस, पीछे चौदे तबकों बाढ्यो जस।। ३७ ।।**

कुरान में लिखा है कि ईसा रूह अल्लाह दुनियां में आकर चालीस वर्ष तक बादशाही करेंगे। उनके दीन (धर्म) में निजानन्द सम्प्रदाय में सभी जाति वर्ण के लोग इमाम मेहेंदी श्री प्राणनाथजी के ऊपर ईमान लाकर एक रस हो जाएंगे। ग्यारहवीं सदी के आखिरी दस वर्षों में ब्रह्मसृष्टियों की साहेबी जाहिर होगी। उसके बाद बारहवीं सदी के तीस वर्ष सम्वत् १७४५ से १७७५ तक चौदह लोक के जीवों को कुलजम सरूप की वाणी पहुंचने से मोमिनों का यश बढ़ेगा। इस तरह से श्री श्यामा महारानी की चालीस वर्ष की बादशाही कही है।

**अखंड भिस्त इत जाहेरी, होए रोसन सबमें विस्तरी।**
**दुनियां दौड़ मिली सब धाए, छूट गए वरन भेख ताए।। ३८ ।।**

अखण्ड परमधाम जो आज दिन तक किसी को पता नहीं था, की हकीकत कुलजम सरूप की वाणी से संसार में जाहिर हो गई। दुनियां के उत्तम जीव इस वाणी को सुनकर अखण्ड सुख की चाहना से दौड़-दौड़कर श्री पद्मावतीपुरी धाम में श्री प्राणनाथजी के दर्शन करते हैं और कुलजम सरूप की वाणी का ज्ञान प्राप्त करते हैं। तब उनका जाति, भेष, ऊंच-नीच की खींचतान की सब जाली छूट जाती है।

**कह्यो न जाए धनीको विलास, पूरी साथ सकल की आस।**
**लीला विनोद करसी हांस, ए सुख उमत लेसी खास।। ३९ ।।**

परमधाम में श्री राजजी महाराज के सुख-विलास बेशुमार हैं जो कहने में नहीं आते। कुलजम सरूप की वाणी से यह सुख दिखाए और मोमिनों के खेल देखने की इच्छा को पूरा किया। कुरान और पुराण में जो भविष्यवाणी की थी कि आखिर के जमाने में बुध निष्कलंकजी आकर ब्रह्मानन्द लीला के हास्य और विनोद की बातें करेंगे जिससे खासल खास ब्रह्मसृष्टि आनन्द लेंगी।

**ले दौड़े रोसनी दासानुदास, ले जाए पवन ज्यों उत्तम बास।**
**इस्क न खाने देवे स्वांस, ज्यों अगनी न छोड़े दाना घास।। ४० ।।**

परमधाम के ज्ञान की रोशनी कुलजम सरूप की वाणी को जाहिर करने के लिए श्री प्राणनाथजी की अंगनाएं दौड़-दौड़कर देश-परदेश में पहुंचाएंगी। जिस तरह से सुगन्धि हवा के द्वारा फैलती है, इसी तरह से मोमिन सब जगह वाणी को फैलाएंगे और तब दुनियां में प्रेम और इश्क की लज्जत के सिवाय और कुछ नहीं दिखेगा। जिस तरह से अग्नि दाना और घास को जलाकर भस्म कर देती है, उसी तरह से कुलजम सरूप की वाणी से माया मोह भस्म हो जाएंगे।

**जाए पड़े प्रेम के फांस, ज्यों सूके लोहू गल जाए मांस।**
**पीछे तीसों नूर बरसात, तिन आगूं आवसी पुल-सरात।। ४१ ।।**

जिस तरह से अग्नि में जलने के बाद शरीर सिकुड़ जाता है, चल-फिर नहीं सकता है, उसी तरह से जिसकी आतम प्रेम की अग्नि में जलती है, वह माया के सुख-स्वाद लेने कहीं जाती नहीं है। एक धाम धनी के प्रेम में ही मग्न रहती है। सम्वत् १७४५ में ग्यारहवीं सदी पूरी हुई। उसके तीस वर्षों तक कुलजम सरूप की वाणी गांव-गांव में जाहिर हुई। इसके बाद सत्तर वर्ष शरीयत के रास्ते पर चलने वालों के लिखे हैं जो १७७५ से १८४५ तक हुए।

Nijanand App

**सत्तर बरस लों आग जलाए, तब फरिस्ते दिए चलाए।**
**अजाजील विरहा आग जल, पीछे असराफीलें किए निरमल।। ४२ ।।**

श्रीजी के अदृश्य होने पर सच्चे ज्ञान के आशिक रूहें विरह की अग्नि में पश्चाताप करते हुए जले। धिक्कार है, हमारे जीवन पर कि धाम धनी आए और हमने पहचान नहीं की। इसके बाद अजाजील ने भी विरह की अग्नि में जलकर पश्चाताप किया और फिर असराफील की जागृत बुद्धि की वाणी कुलजम सरूप ने निर्मल कर दिया।

**आगे असराफीलें कायम किए, तेरही में नूर नजर तले लिए।**
**नूर नजर तले हुए सुध, आए माहें जाग्रत बुध।। ४३ ।।**

इसके बाद असराफील (जागृत बुद्धि के फरिश्ते) ने तेरहवीं सदी में अक्षर की नजर योगमाया में सभी को कुलजम सरूप की वाणी से पाक करके बहिश्तों को कायम किया।

**नतीजा पावे सब कोए, सो हुकम हाथ छत्रसाल के होए।। ४४ ।।**

श्री प्राणनाथजी महाराज के हुकम से महाराजा छत्रसालजी सभी को उनके कर्मों के अनुसार बहिश्तें कायम कर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। १९१ ।।

**हुइयां सोभा तेरी सोहागनियां, इन जुबां न जाए बरनियां।**
**ए जो मिलावा माननियां, ताए बड़ाइयां दैयां धनियां।। १ ।।**

स्वामी श्री प्राणनाथजी महाराज कहते हैं, हे शाकुंडल सखी! (महाराजा छत्रसाल) खेल से परमधाम तक तेरी शोभा होनी है जो इस जबान से वर्णन नहीं हो सकती। यह बारह हजार मोमिनों के अन्दर तुम्हें श्री राजजी महाराज ने बड़ी साहेबी दी है।

**कदम हादी मेरे सिर पर, जो सब दीनों का पैगंमर।**
**हजरत ईसा रूहअल्ला नाम, कहूंगी जो कह्या अल्ला कलाम।। २ ।।**

महाराजा श्री छत्रसालजी कहते हैं कि मेरे सिर पर हादी श्री प्राणनाथजी के चरण कमलों की मेहर साक्षात् है जो सभी धर्मों के धर्मग्रन्थों से प्रमाण देकर पैगाम देते हैं। रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी जी (श्री देवचन्दजी) के तारतम ज्ञान से और रसूल साहब के कुरान से गवाही देकर कहता हूं।

**रसूल रूहअल्ला और इमाम, इन तीनों मिल मोको दई ताम।**
**मैं सिर पर ए लिए कलाम, आए कुंजी बका की करी इनाम।। ३ ।।**

रसूल साहब, रूह अल्लाह श्यामा महारानी और इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी महाराज तीनों ने मिलकर कुलजम सरूप की अखण्ड वाणी (आत्मा का आहार) को दिया। इन तीनों स्वरूपों के वचनों को मैंने सिर पर धारण किया, जिन्होंने खेल में आकर मुझे तारतम ज्ञान की कुंजी बख्शीश की।

**ए साहेदी सिपारे सूरत, जो उतरियां अल्ला आयत।**
**या तो हदीसें कहूं महंमद, या बिन और न कहूं सब्द।। ४ ।।**

यह गवाही कुरान के सिपारों और सूरतों में लिखी है। खुदा की तरफ से जो आयतें आई हैं या मुहम्मद साहब ने जो हदीस में कहा है इनके प्रमाण के बिना और कोई शब्द नहीं कहूंगी।

Nijanand App